0117CH09

9. गेंद-बल्ला

गेंद ने बल्ले से कहा – तुम मुझे क्यों मारते हो?
बल्ले ने कहा – मारूँ नहीं तो खेल कैसे हो?
गेंद जब बल्ले के पास आई तो उसने उसे ज़ोर से मारा।
गेंद कुदकती-फुदकती दूर जाकर एक झाड़ी में छिप गई।

बल्ला उसे ढूँढ़ता रहा, ढूँढ़ता रहा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते शाम हो गई। अँधेरा घिरने लगा। गेंद खुश थी कि बल्ला परेशान हो रहा है। बल्ला निराश होकर लौट चला।

तभी गेंद ने झाड़ी में से चिल्लाकर कहा – मैं यहाँ हूँ। आओ, मुझे ले लो।

बल्ले ने उसे झाड़ी के नीचे से खींचकर उठा लिया। गेंद ने कहा – देखो, अब मुझे मारना मत।

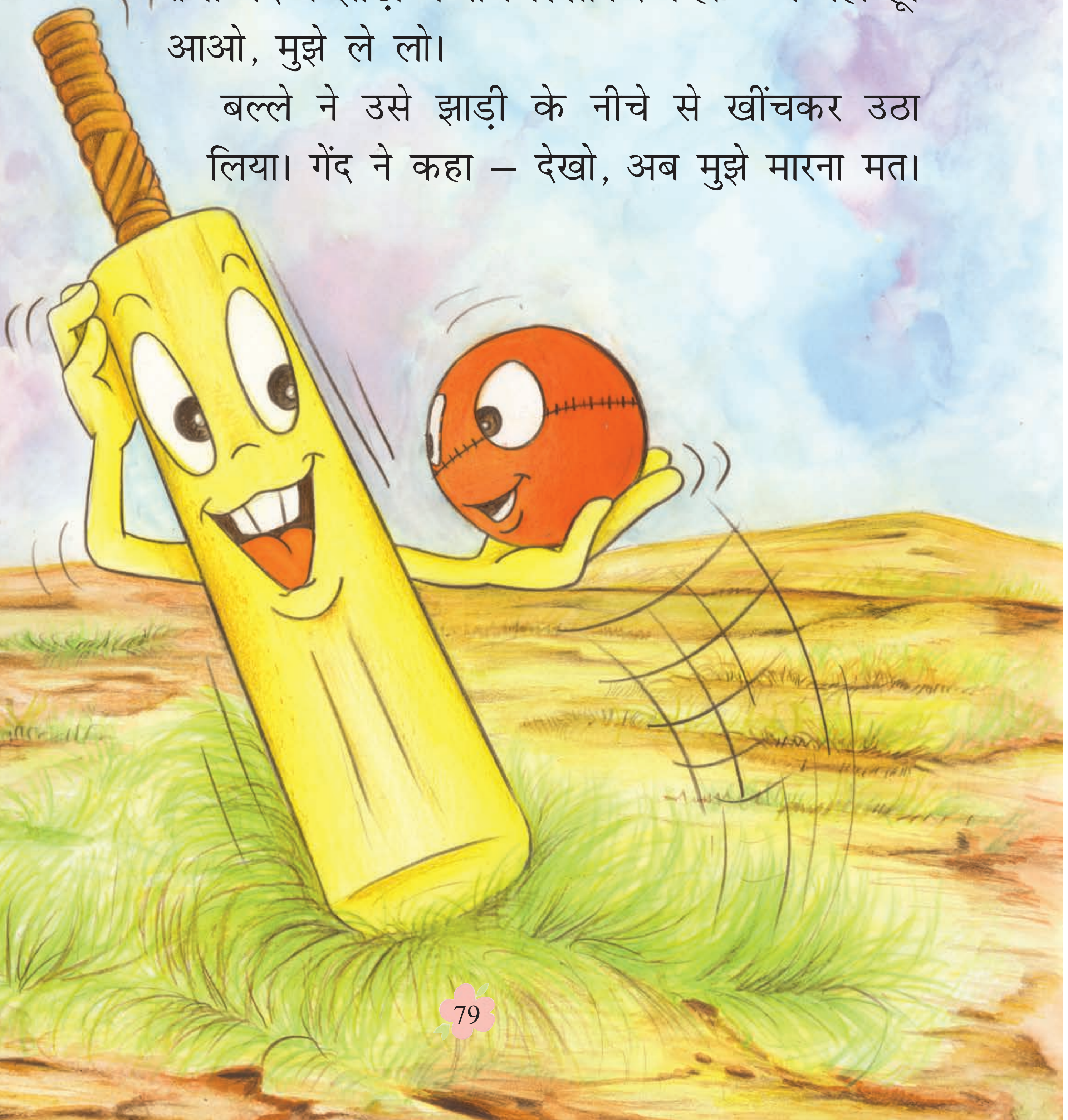

गिल्ली डंडे के खेल में गिल्ली को डंडे से मारते हैं। कुछ और खेल बताओ, जिनमें एक चीज़ को दूसरी से मारा जाता है।

....

....

....

गेंद खो गई तो गेंद–बल्ला नहीं खेल पाएँगे।

गुल्ली खो गई तो ....

माँझा खो गया तो ....

पासा खो गया तो ....

चिड़ी खो गई तो ....

अगर तुम्हारे घर में गेंद खो गई तो कहाँ–कहाँ ढूँढ़ोगे?

....

....

....